# समकालीनता और आधुनिकता का अन्तर्सम्बंध

*अखिलेश कुमार,*
*शोध छात्र,*
*हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,*
*डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,*
*लखनऊ (उ0प्र0)*

*डॉ0वीरेन्द्र सिंह यादव,*
*अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,*
*हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,*
*डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,*
*लखनऊ (उ0प्र0)*

## शोध सारांश

*समकालीनता और आधुनिकता के अन्तर्सम्बन्ध को अपने अपने दृष्टि कोण से व्याख्यायित और विश्लेषित किया हैएसमकालीनता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान के साथ बोध के सामंजस्य का सतत द्वव्दं मौजूद रहता है। किसी भी ऐतिहासिक क्षणएयुग एआन्दोलन प्रवृत्ति में बोध और वास्तविक्ता के सामन्जस्य से समकालीनता का ढांचा जन्म लेता है। आधुनिकता के अपेक्षा समकालीनता का फलक सीमित होता है। आधुनिकता एक विस्तृत फलक का द्योतक है। नवजागरण की चेतना एआत्मीयता की भावना एनवीन ज्ञान विज्ञान के प्रयोग ने आधुनिकता की भावना को जन्म दिया है। आधुनिकता मनुष्य के सभ्य होने की प्रक्रिया की पहचान है।*

**Key words** : *समसामायिक, भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, नयी शिक्षा, मानवीय भावबोध, तात्कालिक, दृष्टिकोण, फैशन, बहुविधि।*

विद्वानों ने 'आधुनिकता' की तरह 'समकालीनता' को भी अपने–अपने दृष्टिकोण से व्याख्यायित और विश्लेषित किया है और कर रहे हैं पर उसकी एक सर्वमान्य व्याख्या अभी तक नहीं हो पायी है। भूमण्डलीकरण एवं उदारीकरण से उत्पन्न आधुनिकीकरण की तमाम कोशिशों के बाद भी भारतीय समाज में सामंती अवशेष अभी भी उपस्थित हैं। स्त्री–विमर्श इन्हीं सामंती संस्कारों के प्रति विद्रोह और समाज के जनतांत्रीयकरण का आह्वान करता है।

आधुनिकता नये साहित्य के संदर्भ में ही नहीं, समस्त आधुनिक चिंतन एवं विचारणा में सर्वाधिक चर्चित, सर्वाधिक भ्रांत और सर्वाधिक अस्पष्ट शब्द है, जिसके विषय में अन्तिम और सुनिश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। आधुनिकता, आधुनिकतावाद, आधुनिक, आधुनिकीकरण, आधुनिक बोध आदि वर्तमान समय के ऐन्द्रजालिक सम्मोहन से युक्त प्रत्यय रहे हैं। अनेक चिंतकों और साहित्यकारों ने आधुनिकता सम्बंधी बहुत स्वस्थ एवं सुचिंतित दृष्टि प्रदान की, किन्तु कभी–कभी आधुनिकता सम्बंधी परिचर्चाओं और बहसों ने इसको समझने में सुविधा कम और बाधा अधिक दी। आधुनिकता के संदर्भ में प्रयुक्त सभी शब्दों की सृष्टि संस्कृत के शब्द 'अधुना' से है जिसका अर्थ अभी–अभी जो एक तरह से 'कालवाची' है। वे ये सारी संज्ञाएं अर्थ के संदर्भ में अंग्रेजी के शब्द 'माडर्न' से सम्बंधित है। डॉ0 लोठार लुत्से जैसे जर्मन विद्वान 'आधुनिकता' को मात्र फैशन के रूप में ही व्याख्यायित करते है। आधुनिकता के– ''किंचित लक्षणार्थ का आभास इसके जर्मन समानार्थी 'माडर्न' शब्द से चलता है, जिसका निकट सम्बंध 'मार्ड' अर्थात् 'फैशन' से है। वास्तव में

आधुनिकता का अर्थ प्रायः फैशनेबल होना अर्थात् बहुसंख्यक रूचि के अनुकूल होने अथवा फैशन के रूप में भिन्न होने का प्रमाण होता है। इसे हम साहित्यिक दंभ कह सकते है।''[1] किन्तु बहुप्रचलित शब्द होने के कारण ही आधुनिक चिंता की इस महत्त्वपूर्ण वृत्ति को मात्र 'फैशन' या 'साहित्यिक दंभ' कहकर उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यह निश्चित है कि 'आधुनिकता' का प्रयोग बहुविधि और अर्थ बहुत लचीला रहा है। किसी ने इसे एक रूप में तो दूसरे ने सर्वथा भिन्न अर्थ में ग्रहण किया। आधुनिक और आधुनिकता शब्दों की इतनी अर्थ संहतियाँ है कि उनमें से अत्यंत भ्रामक और निरर्थक हो गयी है। ये प्रयोग इतने भौंडे और अशोभनीय है कि– ''आधुनिकता के शब्द कोशगत अर्थ को स्वीकारने का कोई औचित्य नहीं रह गया है।''[2] फैशन की विज्ञप्ति के रूप में आधुनिक फर्नीचर (मार्डन फर्नीचर) अत्याधुनिक आवास (अल्ट्र माड्रन फ्लैट), आधुनिक बाल रूम नृत्य (माड्रन बाल रूप डांसिग) आदि आधुनिक का ऐसा ही अशोभनीय प्रयोग हुआ है। जबकि आधुनिक चिंतन में 'आधुनिक' का इन प्रयोगों से कोई सरोकार नहीं है। आधुनिकता और आधुनिकतावाद के बीच फर्क बताते हुए डॉ0 इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं कि– ''आधुनिकता और आधुनिकतावाद में इतना तो साफ हो चुका है कि पहली में गति है और दूसरी में स्थिति, पहली प्रक्रिया है और दूसरी प्रक्रिया का परिणाम, पहली में मूल्यों के बनने की बात है तो दूसरी में इसके स्थापित होने की। आधुनिकता को लक्षणों में बाँधने की कोशिश इसे आधुनिकतावाद के सांचों में ढालती रही है।''[3] ऐसी मिलती जुलती धारणा पुष्पपाल सिंह की भी है जिन्होंने लिखा कि– ''आधुनिकतावाद में हम कुछ ऐसी गलत धारणाओं एवं विश्वासों को भी स्वीकार कर अपने को आधुनिक दिखाने का दंभ भर सकते हैं जिसका आधुनिकता से दूर दराज का भी कोई सम्बंध नहीं है।''[4]

भारतीय समाज और साहित्य में आधुनिकताबोध का पर्दापण नवजागरण के साथ हुआ। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिकाल की शुरूआत सन् 1850 ई0 या 57 ई0 यानी बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जन्म का वर्ष या प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से माना जाता है, लेकिन डॉ0 बच्चन सिंह का कहना है कि– ''आधुनिक भारत की नींव का पहला पत्थर राजा राममोहन राय ने रखा। आधुनिकीकरण के सिलसिले में ही उन्होंने सन् 1828 ई0 में ब्रह्म समाज की स्थापना की।''[5]

आधुनिकता के केन्द्र में हम जिस विचारधारा और नवीन जीवन मूल्यों और तकनीकी प्रगति की बात करते हैं, उस दृष्टि से आधुनिकता की शुरूआत और पीछे से मानना पड़ेगा। राजनैतिक स्थिति का अवलोकन करते हुए डॉ0 बच्चन सिंह का कहना है कि– ''सन् 1857 ई0 से हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल शुरू हो जाता है पर भारत वर्ष के आधुनिक बनने की प्रक्रिया की शुरूआत एक शताब्दी पूर्व उसी समय से (सन् 1757 ई0) हो जाती है जब ईस्ट इण्डिया कंपनी ने नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी की लड़ाई में हाराया था।''[6]

अंग्रेजी शासन हो जाने के परिणामस्वरूप– सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन हुए जिससे जीवन में अनेक नई समस्याएं जन्म ले ली। अब इन समस्याओं से निकलने के लिए नई शिक्षा प्रणाली और ज्ञान विज्ञान का सहारा लिया गया। जमींदारी और सामंतीवादी व्यवस्था मजबूत हुई। भूमि व्यक्तिगत सम्पत्ति और उत्पादन की वितरण प्रणाली बदली, पुराने सामाजिक सम्बन्धों पर स्थान पर नये–नये सामाजिक सम्बंध बनने लगे। व्यक्ति स्वार्थी हो गया, रिश्तों के केन्द्र में धन आने लगा। ग्रामीण व्यवस्था टूटने लगी। न्याय के लिए नयी तरह की संस्थाओं का जन्म हुआ। यातायात, संचार आदि विकसित होने से औद्योगीकरण की प्रक्रिया में ग्रामीण लघु कुटीर उद्योगों का बचे रहना मुश्किल

हो गया लेकिन व्यवस्था परिवर्तित हो जाने पर नए–नए आर्थिक वर्गों का उदय, उच्च वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के अतिरिक्त एक नया वर्ग–मध्यवर्ग का उदय हो रहा था जो पश्चिमी शिक्षा पद्धति का परिणाम है। यही वह समय भी है जब भारतीय समाज में बदलाव करने से हिन्दी साहित्य में भी बदलाव दिखायी देने लगा।

नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के जन्म हो जाने से साहित्य भी अब दरबारी व सामंती संस्कृति से मुक्त होकर आम जनता से जुड़ गया। साहित्य मनुष्य के वृहत्तर सुख–दुख से पहली बार जुड़ा। यह भारतेन्दु के समय में हुआ और गद्य में पहली बार। ऐसी स्थिति में अधिकांश विद्वान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी से हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल की शुरूआत मानते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सम्बंध में आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि– ''नई शिक्षा के प्रभाव से लोगों की विचारधारा बदल गयी थी। उनके मन में देश–हित, समाज हित आदि की नई उमंगें उत्पन्न हो रही थीं। काल की गति के साथ–साथ उनके भाव और विचार तो बहुत आगे बढ़ गये थे, पर साहित्य पीछे ही पड़ा था। भारतेन्दु ने उस साहित्य को दूसरी ओर मोड़कर जीवन के साथ फिर से लगा दिया। इस प्रकार हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विभेद पड़ रहा था उसे उन्होंने दूर किया।''[7] नई शिक्षा और नई विचारधारा से आधुनिकता का जन्म शुक्ल जी मानते हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आधुनिकता को एक प्रगतिशील प्रक्रिया मानने के साथ सन् 1860 ई0 के बाद ही आधुनिकता की शुरूआत मानते हैं। 'परम्परा बनाम आधुनिकता' निबन्ध में उन्होंने लिखा है कि– ''आधुनिकता सम्प्रदाय का विरोध करती है, क्योंकि आधुनिकता गतिशील प्रक्रिया है सम्प्रदाय स्थिति संरक्षक परन्तु परम्परा से आधुनिकता का वैसा विरोध नहीं होता। दोनों ही प्रगतिशील प्रक्रियाएं हैं। दोनों में अन्तर यह है कि परम्परा यात्रा के बीच पड़ा हुआ अन्तिम चरण है, जबकि आधुनिकता आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है। आधुनिकता अपने आप में कोई मूल्य नहीं है। मनुष्य के अनुभवों द्वारा जिन महनीय मूल्यों को उपलब्ध किया है, उन्हें नए संदर्भों में देखने की दृष्टि आधुनिक है।''[8]

विवेक, तर्क और विज्ञान के अनेक तत्व प्राचीन और मध्ययुगीन समाज में भी थे। किन्तु उसमें वह परिपक्वता संगठित और गतिशीलता नहीं थी जो कि उस समाज को आधुनिक समाज में तब्दील कर सके। आधुनिकताबोध के दो प्रमुख अर्थ ध्वनित होते है– पहला यह कि, यह एक आधुनिक जीवन दृष्टि है, जिसके केन्द्र में मनुष्य है, जो मानवीय भावबोध से युक्त है। दूसरा– यह एक सामाजिक मूल्य है जिसमें सामूहिक मानव मुक्ति के प्रयास की भावना निहित है। ऐसे कई अन्य प्रवृत्तियाँ भी मौजूद है जो आधुनिकता के पूर्व में थी और बाद में भी। आधुनिकता वर्तमान से जुड़कर भी परम्परा से चली आ रही बातों को बिल्कुल तिरस्कार नहीं करती बल्कि देशकाल, वातावरण, परिवेश के व्यापक धरातल में विस्तृत सांस्कृतिक धरोहर एवं परम्परा के स्रोत से अपनी संजीवनी ग्रहण करती है। जो समाज के हित में हों। नरेन्द्र मोहन का कहना है कि– ''आधुनिकता एक प्रश्नाकुल मानसिकता है जो हर बंधी–बधायी व्यवस्था या धारणा को तोड़ती है, इसे चरम निरपेक्ष नहीं माना जा सकता। यह मुख्य रूप से ऐसी मानसिकता है जो किसी एक मूल धारणा या सिद्धान्त को स्वीकार्य करने से पूर्व इसे जाँचने पड़तालने पर बल देती है।''[9] कमलेश्वर ने भी आधुनिकता को एक मानसिक प्रक्रिया के रूप में लक्षित करते हुए कहा है कि– ''आधुनिकता एक ऐसी मानसिक–बौद्धिक स्थिति है, जो अपने परिवेश और समाज की गहनतर समस्याओं से उद्‌भुत होती है और समकालीन जीवन को संस्कार देती है। मुख्य–मुख्य मानव–मूल्यों में सर्वव्यापी और सार्वजनीन होते हुए भी आधुनिकता का स्वरूप अपनी जातीय विशेषताओं से अलग

नहीं होता। जातीय संस्कारों के रहते हुए भी इसमें इतनी उदारता है कि वह विजातीय गुणों को अपने में समाहित करने की शक्ति रखती है।''[10] समकालीन कथा साहित्य में व्यक्त संवेदना आधुनिक परिवेश और परिदृश्य को समग्रता से अभिव्यक्त करती है।

इस आधुनिकता ने मानव को एक स्वस्थ संतुलित एवं स्वतंत्र दृष्टि प्रदान की है जिसके बिना जीवन का विकास सम्भव नहीं हो पाता है। इसलिए आधुनिकता समय विशेष की सीमित दृष्टि नहीं, न ही अराजक मूल्यों की द्योतक ही बल्कि आधुनिकता तो वर्तमान के प्रति ही नहीं सम्पूर्ण काल के प्रति सर्तकता है। इस संदर्भ में विष्णु प्रभाकर का लिखना है कि– ''वह सिद्धान्तहीनता या अराजकता नहीं है वह तो सिद्धान्त और व्यवस्था को जड़ होने से बचाती है, निरन्तर या रक्त देकर जीवित रखती है। जिज्ञासा और प्रश्नाकुलता के अभाव में मनुष्य किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकता।''[11]

रामधारी सिंह 'दिनकर' अपने 'साहित्य और आधुनिकताबोध' निबंध में लिखते हैं कि– ''जिसे हम आधुनिकता कहते हैं, वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंधविश्वास से निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकात में उदारता बरतने की भी प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म के सभी रूप पर पहुँचने की प्रक्रिया है। आधुनिकता वह है जो मनुष्य की ऊँचाई, उसकी जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापता है। आधुनिक वह है जो मनुष्य–मनुष्य को समान समझता है। इस अर्थ में आधुनिकता का आरम्भ में बुद्ध के समय हुआ था और वह धारा तब से भारत में बराबर आ रही है। .....किन्तु जिस आधुनिकता को हम यूरोप से सम्बद्ध मानते हैं उसका प्रवेश इस देश में 19वीं सदी में हुआ था।''[12]

गंगाप्रसाद विमल वर्तमान स्थिति में आधुनिकता के प्ररूप पर बहस करते हुए लिखते है– ''पूँजीवादी व्यवस्था में पतनशील अतिवादिताएँ ही आधुनिकता के जीवित अवशेष हैं, समाजवादी व्यवस्था में एक सकारात्मक विकल्प की खोज के लिए आधुनिकता और आधुनिक विज्ञान का उपयोग हो रहा है; अल्पविकसित विचारशील देशों में आधुनिकता विषमता, गरीबी, राजनीतिक दांव पेच में मुखरित होकर एक प्रतीक्षावाद के रूप में अवस्थित है।''[13]

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर यूरोप में सामंतवाद का पतन हुआ, वही दूसरी ओर पूँजीवाद का विकास प्रारम्भ हुआ। उद्योगों के कारण शहरीकरण ने गति पकड़ी, गाँव शहर बनने लगे, शहर कस्बों में परिवर्तित हुए और धीरे–धीरे महानगर अपने विशाल स्वरूप में उभरकर सामने आये। यह सब आधुनिकता का प्रभाव है और 20वीं शताब्दी में पहुँचकर आधुनिकता का परिवेश अधिक व्यापक हो गया। शम्भुनाथ सिंह आधुनिकता को एक सामाजिक जीवन–बोध है, जो समाज के ऐतिहासिक विकास–क्रम के विभिन्न आयामों से जुड़ा होता है।''[14] लक्ष्मीकांत वर्मा लिखते हैं कि– ''आधुनिकता कोई तात्त्विक नियमन नहीं है, वह एक मानसिक दृष्टि है।''[15]

आधुनिकता का सम्बंध आधुनिकीकरण के फलस्वरूप पुरातन तथा परम्परागत विचारों एवं मूल्यों, धार्मिक विश्वासों और रूढ़िगत रीति–रिवाजों के विरूद्ध नवीन प्रायः वैज्ञानिक आविष्कारों तथा विचारों, नए मूल्यों और रवैयों से है। आधुनिकता के व्यापक विस्तार में अन्वेषणों और आविष्कारों समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान में नवचिंतन (नव–फ्रायडवाद, नव–यथार्थवाद, नव उपनिवेशवाद) की अहम भूमिका रही है। ये वे परिवर्तन है जिन्होंने आधुनिकतावाद की परवरिश की है क्योंकि यह सब परिवर्तन नवचिंतन और तत्व कला और साहित्य में नए प्रयोगों के कारण बने हैं। इसलिए साहित्य कला में आधुनिकतावाद एक महत्वपूर्ण

आन्दोलन बन गया। श्यामचरण दुबे ने भारती आधुनिकता के लिए तीन आदर्श रखे– ''पहला– परम्परागत समाज के बदले गतिशील, वैज्ञानिक समाज का सपना। पूरी जनता के रोजगार के अवसरों की खोज, उपादानों में परिवर्तन, मूल्यवाची विश्वदृष्टि से सम्पन्न ज्ञान की खोज राष्ट्र की प्रमुख माँग का बोध, अनुकूल तंत्र की पहचान; ''द्वितीय– सामाजिक पुनर्निर्माण तथा उचित अनुशासन। तंत्र में शामिल नीचे से ऊपर तथा ऊपर से नीचे–अनुशासित दायित्व की जानकारी, प्रशासनिक ढाँचे में आत्मनिर्भरता; ''तृतीय– ढाँचे में श्रेष्ठ कर्म को बढ़ावा, अक्षमता उदासीनता तथा भ्रष्टाचार को दण्ड। यह अधिकारी तथा राजनीतिज्ञों पर समान रूप से लागू हो।''[16] दुबे जी का यह कहना ठीक लगता है कि आधुनिकता का आदर्श कर्म है जबकि मध्य युग में वाणी का धन पर्याप्त था। आधुनिकता आदर्शहीन नहीं हो सकती। इसमें कर्म और आदर्श का सापेक्ष द्वन्द्वात्मक रिश्ता होता है।

समकालीन बनाम आधुनिकता की जब हम बात करते हैं तो यह देखने को मिलता है कि आधुनिकता की अपेक्षा समकालीनता का फलक सीमित होता है। समकालीनता अपने समकाल को उसके पूरे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जानने की सचेतनता है। आधुनिकता एक विस्तृत फलक का द्योतक है। नवजागरण की चेतना आत्मीयता की भावना, नवीन ज्ञान विज्ञान के प्रयोग ने आधुनिकता की भावना को जन्म दिया है। आधुनिकता मनुष्य के सभ्य होने की प्रक्रिया की पहचान है। अपने समान्तर आधुनिकता, सत्ता, संस्कृति तथा समकाल के साथ हमेशा तनाव कायम रखती है। आधुनिकता की आहट हिन्दी साहित्य में उन्नीसवीं सदी से मिलना प्रारम्भ हो जाता है। अभय कुमार दुबे अपने एक लेखक में वर्तमान समय में आधुनिकता की पड़ताल करते नजर आते हैं। उनके अनुसार– ''समाज में दो निराकार कारखाने बिना किसी अवकाश के लगभग लगातार काम करते हैं। एक है आधुनिकता का कारखाना जिसका माल सार्वभौम ज्ञान मीमांसा की सामग्री से बनता है। दूसरा भाषा का है, जिसमें परिवेशिक सत्ता मीमांसा की पिघली हुयी धातुओं से आकृतियाँ ढाली जाती है।''[17]

'समकालीनता' और 'समसामयिकता' को आधुनिकता के संदर्भ में विविध रूपों में व्याख्यायित किया गया है। नवलेखन के अन्तर्गत भिन्न–भिन्न रूपों में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं इन्हें 'आधुनिकता' का पर्याय तक मानने की भूल हुई है। अपने मूल अर्थ में 'समकालीनता' और 'समसामयिक' अंग्रेजी के 'कंटेम्पोरेनिटी' तथा 'कोईबल' शब्दों के समतावाची हैं, जिसका अर्थ है 'उसी समय या कालखण्ड में होने वाली घटना या प्रवृत्ति या एक ही कालखण्ड में जी रहे व्यक्ति। किन्तु हिन्दी नवलेखन में इन शब्दों का समय परक अर्थ न लेकर प्रवृत्तिपरक अर्थ ग्रहण करते हुए आन्दोलन धर्मी व्याख्या की गई।

समकालीनता और समसामयिकता समयगत चेतना या बोध है, जबकि आधुनिकता का एक अपना तुलनात्मक संदर्भ है, आधुनिकता अपने पूर्ववर्ती समय से पृथक अपना स्वरूप और अस्मिता कायम करती है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि 'समकालीनता' और 'समसामयिकता' आधुनिकता की पूर्णतः विरोधी है। समसामयिकता हमें अतीत और भविष्य के उचितबोध और सम्बंध से तो परिचित कराती ही, वर्तमान युग की प्रवृत्ति को भी समझने में सहायता देती है। इस प्रवृत्ति के कारण वह युग की आधुनिकता को समझने में भी सहायक है। 'समसामयिकता' शब्द आधुनिकता को बेहतर ढंग से मूर्त करता है। जिस युग के मूल्य और स्थितियाँ समसामयिक नहीं होते, उनमें जड़ता आ जाती है और आधुनिकता की प्रक्रिया को अग्रसारित तो करती ही है, वह उसे समझने में भी सहायक सिद्ध होती है। इस तरह समकालीनता को आधुनिकता से कई तर्कों से

जुड़ता हुआ पाते हैं। तत्वों और प्रवृत्तियों के बदलाव का समकालीनीकरण और आधुनिकीकरण एक ही प्रक्रिया से जुड़ती है।

'समकालीनता' और 'आधुनिकता' का एक महत्वपूर्ण फर्क समग्रता और अपूर्णता का है। स्टीफन स्पेंडर के कथन से इसे अच्छी तरह समझा जा सकता है। उन्होंने जब समकालीनता को आधुनिकता के व्यापक प्रसार में तात्कालिकता की एक प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित करते हुए स्टीफन स्पेंडर ने यूरोप में चौथे दशक के बुद्धिजीवियों द्वारा फासिज्म विरोध और श्रमिक वर्ग के समर्थन को समकालीन बताया है। उनके अनुसार आधुनिकता जीवन को समग्रता में अपनाती और त्यागती है, समकालीनता की दृष्टि खंडित अपूर्ण और तात्कालिक होती है। किन्तु इसका मतलब यह भी नहीं समझना चाहिए कि 'समकालीनता' और 'आधुनिकता' में कोई सम्बंध ही नहीं है या समकालीनता आधुनिकता की विरोधी है। एक ही कालखण्ड में अलग–अलग समकालीनताएँ हो सकती हैं जो अपने युग की प्रवृत्तियों को समझने में सहायक होती हैं। जैसे हिन्दी साहित्य में आधुनिककाल के अन्तर्गत सन् 1970 ई0 के बाद के साहित्य को समकालीन साहित्य में रखा जाता है। लेकिन ऐसा भी नहीं है या समकालीनता आधुनिकता की विरोधी है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि सातवें–आठवें दशक की समकालीनता इक्कीसवीं सदी की समकालीनता जैसी ही रही होगी। इसलिए समकालीनता अलग–अलग खण्डों में चलने वाली आधुनिकता की ही एक प्रक्रिया है।

हिन्दी साहित्य में आधुनिककाल के अन्तर्गत सन् 1970 ई0 के बाद के साहित्य को समकालीन साहित्य में रखा जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि नवें, 8वें दशक की समकालीनता इक्कीसवीं सदी की समकालीनता जैसी ही रही होगी। इसलिए समकालीनता अलग–अलग खण्डों में चलने वाली आधुनिकता की ही एक प्रक्रिया है। समकालीनता हमें अतीत और भविष्य के सम्बंध से परिचित तो कराती ही है। वर्तमान युग की प्रवृत्ति को समझने में किस तरह यह सहायक होती है, इस संदर्भ में अजय तिवारी के कथन उल्लेखनीय है– ''समकालीनता में केवल वर्तमान का अंश नहीं रहता, अतीत की निरंतरता भी रहती है दूसरे किसी भी समय समकालीनता में एक से अधिक प्रवृत्तियाँ उलझी हुई चलती है क्योंकि समाज भी अनेक प्रकार की शक्तियों की आपसी क्रिया–प्रतिक्रिया से बनता है। इसलिए मनुष्य केन्द्रित दूसरी अवधारणाओं की तरह समकालीनता भी द्वन्द्व युक्त गतिमान और जीवंत अवधारणा है जिसे मानव व्यवहार और चितन के बीच घात–प्रतिघात के रूप में ही परिभाषित किया जा सकता है।''[18] आगे वे पुनः लिखते हैं– ''स्वभावतः समकालीनता ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान के साथ बोध के सामंजस्य का सतत् द्वन्द्व मौजूद रहता है। किसी भी ऐतिहासिक क्षण, युग आन्दोलन, प्रवृत्ति में बोध और वास्तविकता के सामंजस्य से समकालीनता का ढाँचा जन्म लेता है।''[19] इस प्रकार समकालीनता आधुनिकता की प्रक्रिया को तो आगे बढ़ाती ही है, वह उसे समझने में भी सहायता करती है और दोनों एक दूसरे की पूरक हैं।

आधुनिकता और समकालीनता को कई बार पर्याय मान लिया जाता है। आधुनिकता एवं समकालीनता को स्पष्ट करते हुए अशोक वाजपेयी लिखते हैं कि– ''मनुष्य की जिन्दगी का एक तात्कालिक संदर्भ है, जिसमें नितान्त आज के सरोकार, तनाव और अन्तर्विरोध है। इनसे अलग लेकिन जुड़ा हुआ मनुष्य का एक व्यापक संदर्भ है, जिसमें उसके चिरंतन प्रश्न और समस्याएँ हैं जिनके रहते मनुष्य संसार में अपने होने, अपने हालात, अपनी नियति और भविष्य के बारे में चिंतित होता है, खोजता है जो कवि मनुष्य के तात्कालिक संदर्भ तक सीमित रह जाते हैं, वे समकालीन तो होते है, आधुनिक नहीं। लेकिन ऐसे कवि–लेखक जो तात्कालिक संदर्भ से सीधे

या परोक्ष ढंग से प्रतिकृत होते हुए अपने तात्कालिक अनुभव को मनुष्य के चरम अनुभव के प्रकाश में उजागर करने और समझने की कोशिश करते है, उन्हें ही आधुनिक कहा जा सकता है।''[20] कहने का तात्पर्य जो समकालीन है वह तो आधुनिक हो सकता है परन्तु आधुनिक समसामयिक भी हो यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि आधुनिकता में समसामयिकता का बहुत कुछ पहले से ही शामिल होता है। इस तरह आधुनिकता समकालीनता की अपेक्षा एक व्यापक शब्द है।

## सन्दर्भ


1. साहित्य : विविध संदर्भ, डॉ0 लोठार लुत्से, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2003, पृ0 11
2. समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 31
3. समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 32
4. समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 32
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2012, पृ0 27
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2012, पृ0 15
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, आठवां संस्करण–2012, पृ0 246
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, संपा0 मुकुन्द द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण 1981, खण्ड–09, पृ0 362
9. आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ, नरेन्द्र मोहन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2003, पृ0 19
10. समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011, पृ0 36
11. कलाकार का सत्य, विष्णु प्रभाकर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1996, पृ0 99
12. डॉ0 रामधारी सिंह 'दिनकर', रचनावली, खण्ड–6, संपा0 नंदकिशोर नवल, तरुण कुमार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2011, पृ0 82–83
13. आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता, गंगाप्रसाद विमल, नयी किताब, दिल्ली, संस्करण–2012, पृ0 15
14. समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011, पृ0 35
15. समकालीन कहानी नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011, पृ0 36
16. आधुनिक हिन्दी कविता और आलोचना की द्वन्द्वात्मकता, कमला प्रसाद, साहित्य वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2006, पृ0 16
17. तद्भव, संपा0 अखिलेश, अभय कुमार दूबे, अंक–22, जुलाई–2010, लखनऊ, पृ0 75
18. आधुनिकता पर पुनर्विचार, अजय तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012, पृ0 197
19. आधुनिकता पर पुनर्विचार, अजय तिवारी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012, पृ0 197
20. हिन्दी का गद्य साहित्य, रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2012, पृ0 143


*Copyright © 2018, Akilesh Kumar & Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*